INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(1): 94-98
Received: 13-12-2023
Accepted: 18-01-2024

मेजर वर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
पी०एच०डी०, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
मेजर वर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
पी०एच०डी०, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

'कजरी' लोकगीत: एक ऐतिहासिक अध्ययन

मेजर वर्मा

सारांश
भारतीय परंपरा में ऋतु और काल के अनुरूप गीत-संगीत का एक स्मृद्ध कोष है। इसी कोष में कजरी लोकगीत की एक शैली है, जिसे सावन के महीने या वर्षा ऋतु में गाया जाता है। कजरी गीत न केवल मौसम आधारित जानकारी उपलब्ध करवाते हैं बल्कि ये लोकगीत श्रृंगार रस, राजीनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्म-कर्म, स्नेह दया, इत्यादि की भी जानकारी देते हैं। हालांकि कजरी का जन्म मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में माना जाता है, लेकिन आज पूर्वी उत्तर प्रदेश में कई महत्वपूर्ण जिले अपनी अलग-अलग कजरी गायन शैली के लिए प्रसिद्ध है।

कूटशब्द : कजरी, लोकगीत, मिर्जापुर, पूर्वी उत्तर प्रदेश, स्मृतियाँ, भावनाएँ, मौखिक स्रोत, साक्षात्कार, महिलाएं, सावन, मौसम, वर्षा ऋतु।

प्रस्तावना
लोकगीतों का अध्ययन भारतीय इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में हर क्षेत्र की अपनी एक लोक-संस्कृति है और उस लोक-संस्कृति में विभिन्न लोकगीतों का समावेश। इसी प्रकार जब हम पूर्वी उत्तरप्रदेश में लोकगीत संस्कृति की बात करते हैं तो यहाँ यह गीत हमें विभिन्न प्रारूपों में प्राप्त होते हैं जैसे होरी, ददरा, चैता-चैती, सोहर, ठुमरी, कजरी, घाटो इत्यादि। यह गीत न केवल सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं बल्कि इन गीतों का अपना भी एक इतिहास रहा है। यहाँ यह लेख इस क्षेत्र में प्रसिद्ध ऋतु गीत कजरी (कजली) पर आधारित है। यह लेख मेरे द्वारा किए गए शोध कार्य क्षेत्र (फील्ड वर्क) पूर्वी उत्तर प्रदेश में बनारस, मिर्जापुर, सोनभद्र, आज़मगढ़, जौनपुर और अंबेडकर नगर पर आधारित है जिसमें सर्वप्रथम हम कजरी के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास करेंगे, इसके बाद लेख के दूसरे भाग में हम इसके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व पर गौर किया जाएगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

'कजरी' शब्द काजर से बना है, जिसका परिमार्जित रूप काजल है। इसकी ऐतिहासिकता के संदर्भ में कहा जाता है कि सर्वप्रथम यह गीत 'कज्जला देवी' माँ विंध्यवासिनी को प्रसन्न करने के लिए किसी मुसलमान शायर द्वारा रचा गया था। आज भी मिर्जापुर विन्ध्याचल में, जिसे कजरी का जन्मस्थान माना जाता है, जो भी शायर गाने-लिखने के ख्याल से किसी भी कजली-अखाड़े में सम्मिलित होते हैं तो वह पहला गीत (कजली) माँ विन्ध्यवासिनी देवी को ही समर्पित करके लिखते हैं। इस धाम में विन्ध्याचल देवी के मंदिर के पश्चिमी झरोखे के पास आज भी काजल का टीका लगाने और कजरी गाने की परंपरा है। हालांकि कजरी अब एक साहित्यिक विधा बन चुकी है, किंतु इसकी मौखिक परंपरा आज भी जारी है।[1] विन्ध्यवासिनी जन्मोत्सव से तीन मास पूर्व विंध्यक्षेत्र में कजरी का जन्मोत्सव प्रतिवर्ष कजरी महोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसकी अवधि दो से तीन दिन की होती है।

कजरी की भाषा की बात की जाए तो प्रयागराज और काशी के मध्य स्थित होने के कारण मिर्जापुर की भाषा बोली अवधि-भोजपुरी की मिली-जुली खिचड़ी है, इसके साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी अवधि और भोजपुरी का मिश्रण ही प्राप्त होता है। समय के साथ-साथ न केवल कजरी गीतों का क्षेत्र विस्तृत होता गया बल्कि हर क्षेत्र की अपनी एक कजरी गायन शैली भी प्रकाश में आई जैसे- मिर्जापुर की कजरी, बनारस की कजरी, जौनपुर की कजरी, आज़मगढ़ की कजरी इत्यादि। इसके अलावा गुरु-शिष्य परंपरा से निरंतर आगे बढ़ने वाली इस लोककला की घरानेदारी को 'अखाड़ा' नाम दिया गया, जो अनेक ख़लीफ़ाओं एवं उस्तादों के नाम से प्रचलित है। इन अखाड़ों की अलग-अलग विशेषताएँ हैं तथा उनके द्वारा प्रस्तुत सामग्री की विषयवस्तु में भी थोड़ी बहुत भिन्नता है। इनकी कजलियों में उनके अखाड़े के नाम उद्धृत किया जाता है। इन अखाड़ों में पंडित शिवदास, बफ़्पत, कल्लू शाह, इमामन, जहाँगीर, बरकत, अक्खड़, मतिराम, पंडित मुन्नीलाल के अखाड़े प्रमुख हैं, जबकि वाराणसी के भैरो जी अखाड़े का नाम दूर-दूर तक फैला हुआ है।[2] ऐसा माना जाता है कि उन्नीसवीं शताब्दी का काल कजरी का स्वर्णयुग था जबकि बीसवीं शताब्दी के मध्य तक यह सर्व प्रमुख लोकविधा थी, कालांतर में इसके गाने और इसे रचने वालों की संख्या कम होती गई।[3] अपने स्वर्णकाल के दौरान कजरी के नौ अखाड़े काफ़ी सक्रिय थे। इस दौरान कजली-दंगल ख़ूब आयोजित होते थे और नए युवा गायक-गायिकाएँ इन अखाड़ों में सम्मिलित होते थे। ब्रिटिश काल के दौरान इस क्षेत्र के कई बड़े अधिकारी इन कजरी दंगलों का आनंद लेते थे। गंडेबिया नामक कलेक्टर के बारे में कहा जाता है कि वह स्वयं इन गीतों को सुनकर नाचने लगता था।[4] जिससे हम कजरी गीतों की प्रसिद्धि को समझ सकते हैं। कजरी गीत अखाड़ो के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रारंभ से ही गाए जाते रहे हैं। वर्षा ऋतु में झूलो का डालना और महिलाओं द्वारा कजरी गाना ग्रामीण संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। इन गीतों को महिलाओं ने स्वयं की भावनाओं को भी प्रदर्शित करने का एक माध्यम बनाया हुआ है। जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व

कजरी का मुख्य विषय वर्षा ऋतु ही है। इसमें मुख्यतः श्रृगार रस प्रधान होता है, जिसमें संयोग

[1] अर्जुन दास केसरी, *झँझँरै गेड़ुलवाँ गड्डा जल पानी,* (सोनभद्र : लोकवार्ता शोध संस्थान, 1996) पृ० 7

[2] अर्जुनदास केसरी, *गावैं कजरी मल्हार नइहरवाँ,* (दिल्ली : साहित्य अकादमी, 2017) पृ० 17

[3] केसरी, *झँझँरै गेड़ुलवाँ गड्डा जल पानी,* पृ० 7

[4] केसरी, *गावैं कजरी मल्हार नइहरवाँ,* पृ० 7

भी है और वियोग भी। हालांकि जब कोई घटना घटती है तो लोग उस घटना पर आधारित गीतों का निर्माण भी कर लेते हैं। लोगों की भावनाओं के साथ चलते हुए ही लोकगीतों की लोकप्रियता और प्रासंगिकता बनी हुई है। इस तरह से लोक गायन शैली का रूप बदलता रहता है। कजरी विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में गाई जाती है। कजरी गीतों में आमतौर पर बारिश से संबंधित छवियों और घटनाओं का वर्णन है जैसे- काले बादल, बारिश की बूंदाबांदी, बिजली का कड़कना, मेढ़कों की टर्र-टर्र, पक्षियों की चहचहाहट, मोरों की आवाज और कृष्ण के साथ गोपियों का नृत्य करना इत्यादि। जिसका उदाहरण हम निन्म गीत में देख सकते हैं-

झूला डाल देबों कदम के डार पे,
सावन के बाहार में हो न .. 2
झूले राधा-कृष्ण मुरारी,
संग में सखी-सहेली सारी.. 2
झूले गोप-गोपी, झूलना झुलाई के,
कदम के डार पे हो न,
झूला डाल देबों कदम के डार पे
सावन के बाहार में हो न.. 2[5]

(गीत में कहा गया है कि मैं इस सावन की बहार में, कदम की डाली पर झूला डाल दूंगी। इस झूले पर श्री कृष्ण जी, राधा रानी अपनी उनकी सखी-सहेलियाँ और गोप-गोपी के साथ झूला झूल रहे हैं। इसी झूले को मैं झुलाऊँगीं।)

इसके अलावा क्योंकि यह अवधि दो बुनियादी फसलों के बीच आती है, जिसमें एक फसल तैयार है, जबकि दूसरी अभी बोई जानी है। वर्ष के इस समय में किसान अपनी अजीविका कमाने के लिए शहरों या अन्य स्थानों पर जाते हैं, और ग्रामीण महिलाएं अकेली रह जाती हैं। अतः उनका अकेलापन भी अक्सर कजरी गीतों में दर्शाया जाता है।[6] यहाँ हम इन्ही महिलाओं के संदर्भ में इन गीतों का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व भी समझेंगे।

महिलाओं के गीत हमें उनकी लालसाओं, इच्छाओं, उनकी निराशाओं और जीवन के वभिन्न पहलुओं के साथ आने वाली कठिनाइयों के बारे में बताते हैं। कुछ गीत जहाँ उन्हें विनर्म और शांतचित्त प्रदर्शित करते हैं, वहीं कुछ निर्भिक, साहसी और विद्रोही बताते हैं। यह गीत कई बार एक संवाद के रूप में होते हैं, जो पति-पत्नी, नन्द-भाभी और देवर-भाभी के बीच देखा जाता है। इसी संदर्भ में अगर कजरी गीतों को देखा जाए तो बरसात के मौसम में कई त्यौहार भी आते हैं, जैसे- हरियाली तीज, नाग-पंचमी, रक्षाबंधन। इन त्यौहारों के दौरान विवाहित लड़की को प्रथागत रूप से उसके माता-पिता द्वारा अपने घर पर आमंत्रित किया जाता है। जिसमें आमतौर पर भाई उसे मायके ले जाने आता है। लेकिन गरीब माता-पिता उसे कई बार आमंत्रित करने में सक्षम नहीं होते हैं, अतः लड़की अपने ससूराल में रह कर माता-पिता और भाईयों को याद करती है, इन दुःखों को भी इन गीतों में भलि-भांति प्रदर्शित किया जाता है।[7] इसी प्रकार के गीत का एक उदाहरण देखा जा सकता है-

लागे सावन क महीना दिल लागई न हमार,
हमें नइहर पहुँचाइ देआ ऐ संवरिया
जाइब नइहरे कि ओर, झूला झूलब हिलोर .. 2
सोअब बाबा के अटरिया ऐ संवरिया
हमें नइहर पहुँचाइ देआ ऐ संवरिया
सँइयाँ जइहीं जब ससुरारिहा, देइब चनना केवार
नाहीं खोलब सकरिया ऐ संवरिया

[5] मायावती देवी के साथ मौखिक साक्षात्कार, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश, 24 मई, 2023

[6] आई० श्रीवास्तव, *विमेन ऐज़ पोर्ट्रेड इन विमेंस फोक सोंग्स ऑफ़ नार्थ इंडिया,* एशियन फोकलोर स्टडीज़, वॉल्यूम 50, न० 2, 269-310, (1991) पृ० 280

[7] *वही,* पृ० 280-82

लागे सावन क महीना दिल लागई न हमार,
हमें नइहर पहुँचाइ देआ ऐ संवरिया[8]

(गीत में एक विवाहित स्त्री अपने पति से सावन आने पर अपने घर (मायके) जाने की जिद्द करती है। वह कहती है कि- सावन आ चुका है, मेरा यहाँ मन नहीं लग रहा है, हे प्रीतम मुझे मेरे मायके पहुँचा दो। जब मैं अपने मायके पहुँच जाऊँगी तो वहाँ खूब झूला झूलूँगी और रात में पिता जी की अटारी पर आराम से सोऊँगी। जब आप मुझे वहाँ वापस लेने आओगे तो मैं चंदन के दरवाजे बंद कर दूंगी और उसकी कुंडी नहीं खोलूँगी। हे प्रियतम मुझे मेरे मायके पहुँचा दो।)

इसके साथ-साथ कुछ कजरी गीतों में हमें प्रवासन (माइग्रेशन) की जानकारी भी प्राप्त होती है। हालांकि प्रवासन, आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही नया नहीं है, और सदियों से होता आ रहा है। ग्रामीण समाज के जिन लोगों को जीवित रहना और अपने परिवार का भरण-पोषण करना मुश्किल लगता था, वे पलायन करने के लिए मजबूर हो गए। इस प्रकार धन को उस कारक के रूप में देखा गया, जिसने पत्नियों और पतियों, माताओं और बेटों को अलग कर दिया। यह अतीत और वर्तमान दोनों में भारतीय लोककथाओं, लोकगीतों में अच्छी तरह से परिलक्षित होता है।[9] इसका उदाहरण हम निम्न गीत में देख सकते हैं-

रिमझिम-रिमझिम बरसे बदरिया,
कब घर अइबा संवरिया न.. 2
बदरा घुमर-घुमर के आवे,
चम-चम चमके बिजुरिया न
रिमझिम-रिमझिम बरसे बदरिया.. 2
साँझ-सवेरे बहे पुरवइया,
उड़ि-उड़ि जाले अचरिया हो न
रिमझिम-रिमझिम बरसे बदरिया.. **2**
रहिया रोज निहारों तोहरी,
कागा बोले अटरिया न
त रिमझिम-रिमझिम बरसे बदरिया
कब घर अइबा संवरिया न[10]

(गीत में एक स्त्री अपने पति से सावन महीने में घर वापस लौटने के लिए पूछ रही है। वह कहती है कि- हल्की-हल्की बारिश की फुहार पड़ रही है और तुम्हारी याद आ रही है तुम कब घर आओगे। बादल भी घूम-घूम कर आ रहे हैं और बिजली चमक रही। सुबह और शाम को पूरब की हवा बह रही है, जिससे मेरा आँचल उड़ रहा है। मैं तुम्हारी राह रोज देख रही हूँ, कौआ भी छत पर बैठ के आवाज दे रहा है। तुम कब घर आओगे।)

यहाँ हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि प्रवासन आर्थिक आजीविका और सम्मान तो प्रदान करता है, लेकिन साथ ही परिवारों के अलग होने के कारण भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं को भी जन्म देता है। इसलिए लोकगीत इन समुदायों के समकालीन प्रागितिहास के रूप में का करते हैं, जो हमारे ज्ञान क्षेत्र में लुप्त कड़ी का कार्य करते है।[11] अतः इन गीतों का अध्ययन अति-आवश्यक हो जाता है। क्योंकि कोई भी चीज वास्तविक जीवन में चाहे कितनी भी अस्वीकार क्यों न हो, लोकगीतों में एक स्वीकार्य रास्ता ढूंढ लेती है। लोकगीतों के माध्यम से महिलाएं अपने जुनून, अपनी कुंठाओं, अपने गुस्से और अपने प्यार को व्यक्त करती हैं। लोकगीत सुंदर दृश्य प्रदान करते हैं, जिनके माध्यम से हम उस जटिल घटना को देख और समझ सकते हैं,

[8] भानमती देवी के साथ मौखिक साक्षात्कार, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश, 16 नवंबर, 2023

[9] बदरी नारायण, *मनी, माइग्रेशन एण्ड वर्णाकुलर क्रिटीसिज्म,* इंडियन इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली, वॉल्यूम 43, न० 1, 141-156, (समर, 2016) पृ० 141-42

[10] भानमती देवी, मौखिक साक्षात्कार

[11] डी० फ़ोर्गैक्स, जी० एन० स्मिथ, *सेलेक्शन फ्रॉम कल्चरल राइटिंग्स : एंटोनियो ग्रामस्की,* (शिकागो : हायमार्केट बुक्स, 2012) पृ० 194

जिसे हम संस्कृति कहते हैं।[12] इस प्रकार गीत एक साझा परंपरा है, जिसके माध्यम से भावनाओं को व्यक्त किया जाता है, इसके साथ-साथ यह अभिव्यक्ति के लिए भी एक माध्यम प्रदान करता है।[13]

अंततः यह कहा जा सकता है कि कजरी जैसे लोकगीतों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अपार संभावनाएं है अतः इन गीतों का न केवल ऐतिहासिक अध्ययन करने की आवश्यकता है बल्कि इनके समजिक-सांस्कृतिक महत्त्वों को भी समझने की आवश्यकता है और यह कार्य इतिहास लेखन में तभी पूर्ण हो सकता है जब पहला- इन लोकगीतों का अध्ययन करते समय हमें इतिहास लेखन की प्राचीन परंपरा की पकड़ को थोड़ा ढीला करना पड़ेगा। क्योंकि अगर हम लोकगीतों का अध्ययन करते समय भी पूर्णतः पेशेवर रूख अपनायेंगे तो जो मौखिक इतिहास को लिखित करने का बीड़ा उठाया हुआ है वह कहीं न कहीं छूट जाएगा। दूसरा- लोकगीतों की खोज के लिए अधिक से अधिक लोगों मैदान में आना चाइए, तभी यह महान कार्य पूरा किया जा सकता है। हमारे देश में अनेक भाषाएं हैं और प्रत्येक भाषा में लोकगीतों की अपार उपलब्धता।[14] इसलिए लोकगीतों को हमें उनकी ही भाषा और उनके ही अनुसार सहेजने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. मायावती देवी के साथ मौखिक साक्षात्कार, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश, 24 मई 2023.
2. भानमती देवी के साथ मौखिक साक्षात्कार, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश, 16 नवंबर 2023.
3. केसरी, अर्जुन दास, *झँझँरै गेडुलवाँ गड्डा जल पानी,* सोनभद्र : लोकवार्ता शोध संस्थान, 1996
4. *गावैं कजरी मल्हार नइहरवाँ,* दिल्ली : साहित्य अकादमी, 2017
5. जस्सल, स्मिता तेवारी, *अनअर्थिंग जेंडर : फोकसांग्स ऑफ नार्थ इंडिया,* लंदन : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012
6. जेलडीन, थियोडोर, *पर्सनल हिस्ट्री एंड द हिस्ट्री ऑफ इमोशंस,* जर्नल ऑफ सोशल हिस्ट्री, वॉल्यूम 15, न॰ 3, 339-347 स्प्रिंग 1982
7. नारायन, किरीन, *बड्र्स ऑन ए ब्रांच : गर्लफ्रेंड्स एंड वेडिंग सांग्स इन काँगड़ा,* इथोस वॉल्यूम 14 न॰ 1, 47-75, स्प्रिंग 1986
8. नारायण, बदरी, *मनी, माइग्रेशन एण्ड वर्णाकुलर क्रिटीसिज्म,* इंडियन इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली, वॉल्यूम 43, न॰ 1, 141-156, समर, 2016
9. पाल, हरिसिंह, कवीन्द्र कुमार केसरी, संपादित, *लोकवार्ता,* सोनभद्र : लोकवार्ता शोध संस्थान, 2011
10. फ़ोर्गैक्स, डी॰, जी॰ एन॰ स्मिथ, *सेलेक्शन फ्रॉम कल्चरल राइटिंग्स : एंटोनियो ग्रामस्की,* शिकागो : हायमार्केट बुक्स, 2012
11. भरुचा, रुस्तम, कोमल कोठारी, *राजस्थान, ऐन ओरल हिस्ट्री : कन्वर्सेशन विद् कोमल कोठारी,* नई दिल्ली : पेंगुइन बुक्स, 2003
12. श्रीवास्तव, आई॰, *विमेन ऐज़ पोर्ट्रेड इन विमेंस फोक सोंग्स ऑफ़ नार्थ इंडिया,* एशियन फोकलोर स्टडीज़, वॉल्यूम 50, न॰ 2, 269-310, 1991

---

[12] श्रीवास्तव, *विमेन ऐज़ पोर्ट्रेड इन विमेंस फोक सोंग्स ऑफ़ नार्थ इंडिया,* पृ॰ 283

[13] किरीन नारायण, *बड्र्स ऑन ए ब्रांच : गर्लफ्रेंड्स एंड वेडिंग सांग्स इन काँगड़ा,* इथोस वॉल्यूम 14 न॰ 1, 47-75, (स्प्रिंग, 1986) पृ॰ 56

[14] देवेन्द्र सत्यार्थी, *लोकगीतों की खोज,* में *लोकवार्ता,* सं॰ हरिसिंह पाल, कवीन्द्र कुमार केसरी (सोनभद्र : लोकवार्ता शोध संस्थान, 2011) पृ॰ 47